“Celebrating school leadership recognized school leaders - 2023”

Case Study

Of

Govt. Gyan Jyoti School

Gudrapara Narayanpur
District Narayanpur, Chhattisagarh

(UDISE Code-22183713804)

(Theme : Ttransforming schools investing in succession planning & leadership development)

Location
19.732727, 81.251924

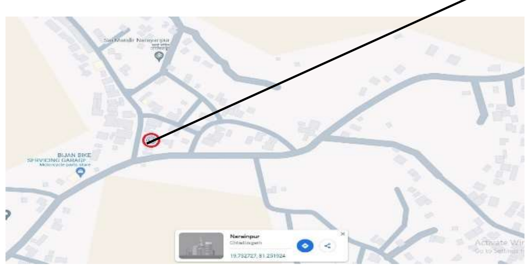

Submitted by :-

Smt. Kavita Hirwani
Teacher (LB)

Guidance by :-

Shri G.R. Mandavi
Principal - Diet Narayanpur

INDEX

क्रमांक	विवरण	पेज नंबर
01	स्कूल प्रोफाइल	03
02	जिला नारायणपुर का परिचय	04
03	अध्ययनकर्ता के विचार	05
04	अध्ययन का विस्तृत विवरण	06
05	नवाचार एवं खेल खेल मे शिक्षा	07-09
06	अभिनव शिक्षण गतिविधियां	10
07	प्रतियोगिताओ का आयोजन	11-13
08	त्योहार-उत्सव का आयोजन	14
09	बच्चों के माताओ का उन्मुखीकरण	15
10	स्कूल मे विशेष गतिविधियां	16
11	प्रिन्ट रिच वातावरण	17
12	मीडिया कवहरेज	18
13	कोरोना काल मे शिक्षा - लाउडस्पीकर क्लास	19-20
14	व्यावहारिक एवं जीविकोपार्जन शिक्षा	21
15	कोरोना वायरस से बचाव	22
16	बच्चों के घरों मे प्रोजेक्ट वितरण	23-24
17	स्कूल एवं शिक्षको को पुरुस्कार एवं सम्मान	25
18	अध्ययन का निष्कर्ष	26

School Profile :-

स्कूल का नाम	:	शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला, गुडरापारा
ग्राम पंचायत	:	गरांजी, नारायणपुर
तहसील	:	नारायणपुर
जिला	:	नारायणपुर
राज्य	:	छत्तीसगढ़
पिन कोड	:	494661
विधानसभा क्षेत्र	:	नारायणपुर
संसदीय क्षेत्र	:	बस्तर
स्थापना	:	वर्ष - 2011
प्रधान अध्यापक	:	श्रीमती सरिता नाग
संचालित कक्षाएं	:	1ली - 5वी
अध्यानरत बच्चे	:	65
पदस्थ शिक्षक	:	03
अध्ययन कक्ष	:	03
शौचालय	:	02
पेयजल सुविधा	:	उपलब्ध

Administration Department:-

कलेक्टर	:	श्री अजीत वसंत (I.A.S.)
जिला शिक्षा अधिकारी	:	श्री राजेन्द्र झा
डाइट प्राचार्य	:	श्री जी. आर. मंडावी
जिला मिशन समन्वयक	:	श्री जी. बी. एस. रेड्डी

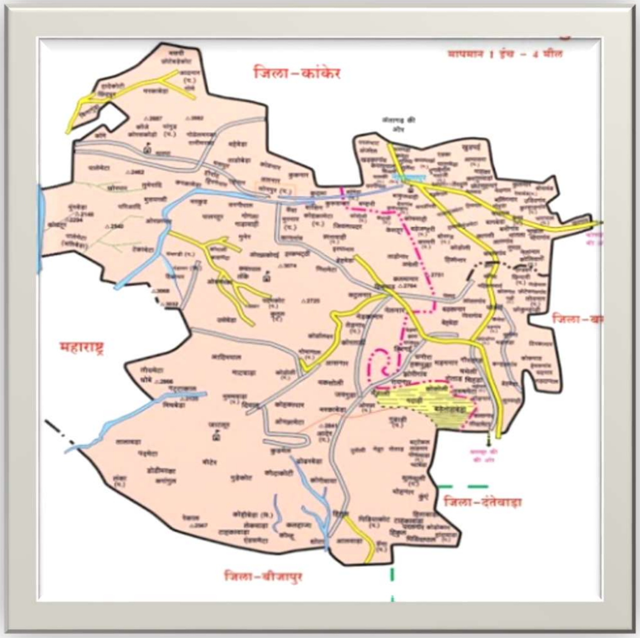

जिला नारायणपुर का परिचय

- छत्तीसगढ़ राज्य के नारायणपुर जिला का गठन 11 मई 2007 को हुआ है। जिसे बस्तर जिले से विभाजीत कर बनाया गया था। नारायणपुर शहर इस जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है।
- नारायणपुर जिले में 1 नगर पालिका एवं 104 ग्राम पंचायतों मे कुल 419 गाँव है। नारायणपुर जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 6922.68 वर्ग किमी है। यह जिला बीजापुर, कांकेर, बस्तर, दंतेवाड़ा और गढ़चिरौली (महाराष्ट्र) जिलों से घिरा हुआ है।
- जिले मे साक्षरता का प्रतिशत 48.62% है ।
- जिला नारायणपुर की जनसंख्या 1,39,820 है, जिसमें पुरुष-70,104 एवं महिलाएँ-69,716 हैं। कुल जनसंख्या की 70% से अधिक आबादी आदिवासी समुदाय की है।
- आदिवासियों और प्राकृतिक संसाधनों की यह भूमि, प्राकृतिक सौंदर्य और सुखद वातावरण से भी समृद्ध है। यह घने जंगलों, पहाड़ियों, नदियों, झरनों से घिरा हुआ है। यहां की कला एवं संस्कृति बहुमूल्य है।
- जिले का दो तिहाई क्षेत्र अबुझमाड़ का है। यह क्षेत्र नक्सलप्रभावित एवं अति संवेदनशील होने एवं सड़क, पुल-पुलिया आदि के न होने के कारण विकास के मुख्य प्रवाह से छुटा हुआ है।
- नारायणपुर नक्सलप्रभावित जिला है । जिले के अंदरूनी क्षेत्रों के नक्सल प्रभावित परिवारों को सुरक्षा एवं पुनर्निवास हेतु जिला प्रशासन द्वारा, नगर के समीप ग्राम पंचायत गरांजी के गुडरापारा में बसाया गया है। इन्ही नक्सल प्रभावित परिवारों के बच्चे, **शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला, गुडरपारा, नारायणपुर** में अध्ययनरत हैं।

शोधकर्ता के विचार ☞

शिक्षक है तो संभव है - "निःसंदेह संभव है"। यदि चुनौती है, तो उसका समाधान भी होता ही है, बस जरूरत होती है प्रयास करने की। इस संबंध में **शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला, गुडरापारा, नारायणपुर** मे मेरे स्वंय की पदस्थापना के दौरान, मेरे द्वारा किए गए शोध, नवाचार एवं अनुभव आपसे साझा करना चाहती हूँ ।

शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला, गुडरापारा, नारायणपुर मे अध्ययनरत नक्सल पीड़ित परिवारों के बच्चे, जिन्हे जिले के अंदरूनी क्षेत्रों से लाकर शहर के समीप सुरक्षित स्थानों में बसाया गया था। ज्यादातर बच्चे सुविधाविहिन परिवार से थे। डरे-सहमे से ये बच्चे स्कूल आना ही नहीं चाहते थे। किन्तु प्रशासकीय अधिकारियों के मार्गदर्शन एवं स्कूल मे पदस्थ शिक्षकों के प्रयास, दृढ़निश्चय एवं नवाचार गतिविधियों द्वारा स्कूल परिसर तथा स्कूल मे अध्ययनरत बच्चों के साथ-साथ उनके परिवार के जीवन शैली मे आया परिवर्तन अनुकरणीय है। साथ ही कोरोना काल जैसे कठिन परिस्थिति मे बगैर इंटरनेट एवं आधुनिक सुविधाओं के इन बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने हेतु उनके परिवार एवं जनसहयोग के साथ-साथ ही स्कूल के शिक्षकों का अभिनव एवं अथक प्रयास, ही मेरे इस अध्ययन/शोध का विषय है ।

स्कूल मे शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार, TLM एवं छात्र-छात्राएं को खेल-खेल मे पढ़ाये जाने संबंधी वीडियो मेरे यू-ट्यूब चैनल YouTube Link - **https://www.youtube.com/@kavitahirwani5823/videos** मे उपलब्ध है ।

श्रीमती कविता हिरवानी
शिक्षक (एल.बी.)
जिला नारायणपुर, छत्तीसगढ़

अध्ययन का विस्तृत विवरण :-

शिक्षक के रूप में मेरी पहली पदस्थापना प्रदेश की राजधानी क्षेत्र में थी, तदोपरांत स्थानांतरण पश्चात वर्ष 2012 मे मुझे नक्सल प्रभावित जिला नारायणपुर में सेवा देने का अवसर प्राप्त हुआ। नारायणपुर जिले में मेरी प्रथम पदस्थापना, शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला, गुडरापारा, नारायणपुर में थी। मेरी पदस्थपना के समय इस स्कूल का भवन नहीं था, मोहल्ले के एक घर मे यह स्कूल संचालित होती थी। कुछ वर्ष पश्चात यह स्कूल अपने नवीन भवन मे संचालित होने लगी। शाला में अध्यनरत बच्चे नक्सलपीड़ित परिवारों से थे, जिन्हे जिले के अंदरूनी क्षेत्रों से लाकर नारायणपुर के सुरक्षित स्थानों में बसाया गया था। यह बच्चे शहरी परिवेश के बच्चों से बिलकुल अलग थे। ज्यादातर बच्चे सुविधाविहिन परिवार से थे, इन बच्चों को ठीक से हिन्दी भी बोलना नहीं आता था। डरे-सहमे से ये बच्चे स्कूल आना ही नहीं चाहते थे, और नया ही पढ़ाई मे उनकी कोई रुचि थी। इन बच्चों को पढ़ाने या सिखाने के लिये सर्वप्रथम तो उनसे बातचीत करना जरूरी था, साथ ही स्कूल एवं शिक्षक के प्रति उनका डर भी खत्म करना आवश्यक था। इसके लिए मैंने सर्वप्रथम स्कूल के आसपास के समुदाय एवं इन बच्चों के परिवारों से मेलजोल बढ़ाया। उनके माताओं से मिलकर उनके भाषा, रहन-सहन से परिचित हुए, साथ ही बच्चों के घर जाने से, उनके माता-पिता से संवाद करने से बच्चों और शिक्षकों के बीच की दूरी भी खत्म होती गई। धीरे-धीरे बच्चे बिना झिझक के स्कूल आते थे, शिक्षकों से बाते करते थे। मैने यह भी देखा की बच्चो को खेलना पसंद था, वैसे तो सभी बच्चों को खेलना पसंद होता है, किन्तु इन बच्चों के पास खिलौने एवं अन्य संसाधन नही होने के बावजुद ये आस-पास के लकड़ी, पत्थर, मिट्टी, कबाड़ इत्यादि से खेल कर भी खुश रहते थे। इस बात ने मुझे प्रभावित किया, और मैने स्कूल के अन्य शिक्षकों के साथ, इन बच्चों को नवाचार तरीकों के माध्यम से खेल-खेल में ही शिक्षा देने की पहल की, जिससे बच्चों को पढ़ना रोचक लगने लगा। आस-पास में आसानी से उपलब्ध सामग्रियों एवं कबाड़, जैसे-फुल, पौधे, प्लास्टिक बॉटल, सुलभ सामग्री एवं अन्य अनुपयोगी सामग्रियों के माध्यम से छात्र-छात्राओं को संख्या-ज्ञान, अक्षर-ज्ञान, मात्रा-ज्ञान, गिनती, जोड़ना, घटाना, इत्यादि सिखाना प्रारंभ किया। मैने देखा की बच्चे इससे खुश थे। उनमें ये जिज्ञासा रहती थी कि

अगले दिन कौन सा नया खेल या नवाचार होगा, इससे बच्चे प्रतिदिन स्कूल भी आने लगे, साथ ही पढ़ाई में रूचि भी लेने लगे ।

नक्सल प्रभावित परिवारों के सुविधाविहीन बच्चों को नवाचार एवं T.L.M. के माध्यम से खेल-खेल में शिक्षा देने की पहल

ELEPHANT
0
9
4
5

41
40
39

Shot on Y17
Vivo AI camera
2022.02.10 10:03

अभिनव शिक्षण गतिविधियाॅ (शून्य निवेश) :-

स्कूल के बच्चों को दैनिक उपयोग एवं आस-पास के वस्तुएं जैसे फुल-पत्तियों, भाजी की डंठल, प्लास्टिक की बॉटल, अन्य कबाड़ सामग्री इत्यादि के माध्यम से शिक्षा देने की पहल की गई । ईससे उन पर कोई वित्तीय भार भी नही आता था, साथ ही खेल-खेल में उन्हे शिक्षा भी रोचक लगती थी और उनकी रचनात्मक योग्यता भी बढ़ने लगी -

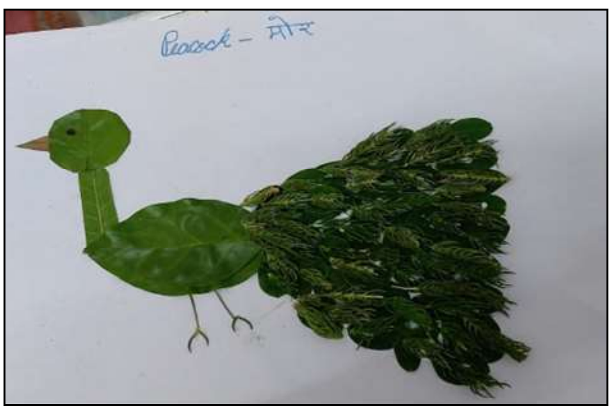

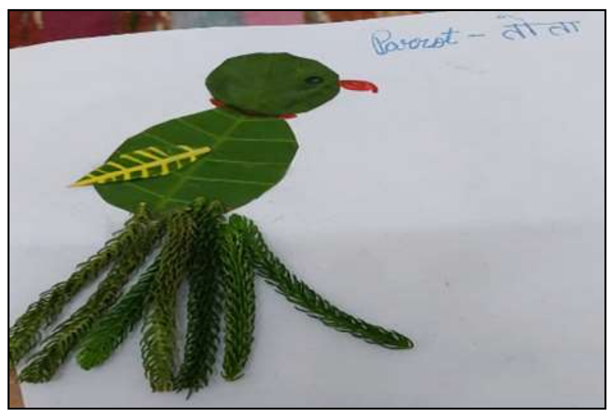

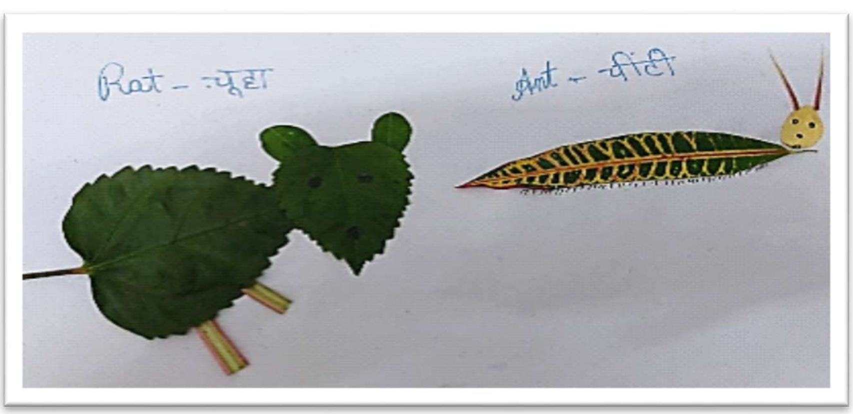

बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन :-

खेल-खेल मे पढ़ते हुए बच्चे अब काफी कुछ सीख गए थे, साथ ही स्कूल और पढ़ाई के प्रति उनका लगाव भी बढ़ गया था । बच्चों को स्कूल से जोड़ने का शिक्षकों का प्रथम उद्देश्य तो पुरा हो चुका था। जब बच्चे पढ़ाई में रूचि लेने लगे, तो शिक्षकों ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए अभिव्यक्ति कौशल के माध्यम से बच्चों को हिन्दी भाषा कौशल से परिचित कराना प्रारंभ किया। साथ ही उनके डर एवं झिझक को दूर करने एवं मंच पर एवं श्रोताओं व अन्य लोगों के समक्ष अपनी बात रखने की योग्यता का विकास किये जाने पर कार्य किया। इसके लिये स्कूल में छोटे-छोटे प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया गया एवं पुरस्कार स्वरूप बच्चों को अपने साथ भोजन कराना, उपहार देना, सभी के समक्ष उनका सम्मान कराने जैसे कार्य करने से बच्चे गौरवान्वित महसुस करते तथा इससे अन्य बच्चे भी प्रोत्साहित होते थे। बच्चों के झिझक को दूर करने हेतु सर्वप्रथम इन प्रतियोगिताओं में स्कूल के बच्चों को सम्मिलित किया, पश्चात उनके माता-पिता को भी सम्मिलित किया। जब बच्चे इनके समक्ष अच्छा प्रदर्शन करने लगे तो अन्य स्कूल के बच्चों, शिक्षकों एवं जनप्रतिनिधिगणों को बुलाकर उनके समक्ष प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों का प्रदर्शन कराया गया। धीरे-धीरे ये बच्चे, जो पहले स्कूल नही आना चाहते थे, एवं डरे सहमे से रहते थे, वे अब नवाचार तरीकों के माध्यम से पढ़कर एवं स्कूल में आयोजित छोटे-छोटे प्रतियोगिता में प्रदर्शन करते हुए इस काबिल हो गए थे, कि जिला एवं ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने लगे, और प्रतियोगिताओं में सफल भी हुए ।

प्रतियोगिताओं में सफल हुए बच्चे अपने शिक्षक के साथ भोजन करते हुए

नवाचार | स्कूलों में छात्रों का वार्षिक ...

बच्चों ने सीखा कबाड़ से जुगाड़ बनाना

नारायणपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

सरकारी स्कूलों को असरकारी बनाने के लिए जिला प्रशासन के द्वारा नवाचार के नए-नए प्रयोग किए जा रहे हैं। मौजूदा दौर पर टीचर लर्निंग मटेरियल प्रोग्राम के जरिए बच्चों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है। कलेक्टर पीएस एल्मा के मार्गदर्शन में जिला मुख्यालय से लगे स्कूलों से लेकर अंदरूनी इलाकों में संचालित होने वाले सरकारी स्कूलों में नवाचार के दिशा में बच्चों को आगे लाया जा रहा है।

खेल के माध्यम से बच्चों के मानसिक विकास पर जोर प्रशासन के द्वारा दिया जा रहा है। नवाचार संयोजक विजेंद्र अग्निहोत्री सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के साथ बच्चों को कबाड़ से जुगाड़ बनाने का आसान तरीका सिखा रहे हैं। शनिवार को जिला मुख्यालय स्थित नयापारा प्राथमिक शाला में टीएलएम प्रोग्राम आयोजित

एक नजर

- नयापारा प्राथमिक शाला में हुआ टीएलएम प्रोग्राम का आयोजन
- वाटर फिल्टर, प्रिंटिंग मशीन और कंकाल तंत्र रहा आकर्षण का केंद्र

कमाल करने के गुर सिखाए गए। संकुल स्तरीय कार्यक्रम में शिक्षकों द्वारा स्कूली बच्चों के साथ वाटर फिल्टर, प्रिंटिंग मशीन, डस्टबिन, मानव चक्र समेत कई वस्तुएं बनाईं। शिक्षकों और बच्चों की हौसला अफजाई के लिए डीइओ गिरधर मरकाम, बीइओ डॉ खेमेश्वर पाणिग्राही समेत बीआरसी और संकुल समन्वयक मौजूद रहे। इस दौरान प्राथमिक शाला गरंजी को नवाचार के बेहतर परफॉर्मेंस के लिए पहला स्थान दिया गया। वहीं दूसरा स्थान प्राथमिक शाला गुडरापारा को मिला, तीसरे स्थान पर प्राथमिक शाला बखरूपारा रही। अतिथियों के द्वारा इन स्कूलों के शिक्षिकाओं को प्रोत्साहित करते हुए तालेश्वरी पुजारी, रामेश्वरी नाग, राधा धृतलहरें, कविता हिरवानी शशि कला पटले के साथ नवाचार की दिशा में विशेष रुचि लेने वाले बच्चे संदीप, लखन, महेश्वरी, सुकलाल को इनाम दिया गया। कार्यक्रम के दौरान बीआरसी अमरनाथ, सीएससी मोहि... बघेल, प्राथमिक शाला नयापारा ... शिक्षिका श्रीमती कृष्णा कश्यप स... अन्य लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम में क... से जुगाड़ बना कर लाई गई साम... आकर्षण का केंद्र बने रहे।

डीइओ गिरधर मरकाम से पहला इनाम लेते गरंजी स्कूल की शिक्षिका तालेश्वरी पुजारी और छात्र संदीप कुमार। • नईदुनिया

क्विज प्रतियोगिता से परखा बच्चों का ज्ञान

नारायणपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करने के लिए नारायणपुर संकुल के शिक्षकों ने नायाब तरीका निकाला है। प्राथमिक शाला गुडरापारा की शिक्षिका कविता हिरवानी की नवाचार सोच पूरे संकुल के बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने की मुहिम में मील का पत्थर साबित हो रही है। अब नारायणपुर संकुल के 13 स्कूलों में प्रत्येक शनिवार को नवाचार गतिविधियों को अपनाकर बच्चों के मानसिक स्तर में सुधार किया जा रहा है। शिक्षकों की आपस में हुई जुगलबंदी सरकारी स्कूलों की पुरानी गाथा को बदलने लगी है। शनिवार को प्राथमिक शाला महावीर चौक के स्कूल में क्विज प्रतियोगिता में सामान्य ज्ञान के सवाल शिक्षकों के द्वारा किए गए। बच्चों ने अधिकांश सवालों का जवाब दिया। संकुल के गुडरा पारा, शांति नगर, गरंजी पारा, गरंजी नयापारा, बालक शाला, प्लाट पारा, कुम्हार पारा, महावीर चौक, मुरियापारा, बखरू पारा, लोहरा पारा, बंगलापारा प्राथमिक शाला के 26 बच्चों से देश और प्रदेश स्तर के सवाल किए गए। अबूझमाड़ से लेकर प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और कलेक्टर से

विवज में अव्वल आए छात्र को इनाम देते प्राचार्य एसआर चंदेल। ● नईदुनिया

जुड़े सवालों का उत्तर बच्चों ने आसानी से दिया। महावीर चौक स्कूल के प्राचार्य एसआर चंदेल के हाथों पहला इनाम गुडरा पारा स्कूल के संतोष अर्जुन को दिया गया। दूसरा इनाम बालक शाला और तीसरा इनाम गरंजी पारा स्कूल के नाम रहा। बच्चों को इनाम के रूप में टिफिन बॉक्स और प्लेट दिए गए। पेन, कापी, कलर पेंसिल, पुस्तक देकर बच्चों की हौसला अफजाई की गई। इस मौके पर बीईओ ईश्वर पाणिग्रही, बीआरसी अमर सिंह नाग, सीएससी मोहित बघेल, शिक्षिका रागिनी कोर्राम, कविता हिरवानी समेत अन्य मौजूद रहे।

बच्चों के साथ त्योहार-उत्सव मनाना :-

बच्चों का मेल-जोल बढ़ाने के लिए त्योहार-उत्सव मे विशिष्ठ अतिथियों को आमंत्रित किया जाता था, जो बच्चों के साथ स्कूल में त्योहार मनाते साथ ही बच्चों के लिए मिठाइयां और उपहार लाते थे। इससे बच्चों का आत्मविशवास तो बढ़ा ही साथ ही सामाजिक अपनत्व से भी परिचित हुए।

कलेक्टर की धर्मपत्नी उपमा साहू पहुंची नक्सल पीड़ित परिवार के बच्चों के बीच

मुलाकातः स्कूली बच्चों के साथ भोजन करतीं उमा साहू।

बच्चों के साथ मिलकर कार्यक्रमों का किया आयोजन

नारायणपुर @ पत्रिका . जिले के कलेक्टर धर्मेश साहू की धर्मपत्नी उपमा साहू ने शनिवार को अपने परिवार के साथ जिला मुख्यालय में नक्सल पीड़ित परिवारों के लिए बनाये गये गुडरापारा वार्ड पहुंचकर नक्सल पीड़ित परिवार के बच्चों हेतु संचालित प्राथमिक शाला गुडरापारा के बच्चों के साथ प्री दिवाली सेलिब्रेशन किया। इस दौरान उपमा साहू ने बच्चों के साथ आयोजन किया। वहीं रंगोली, चित्रकला, रोचक खेल गतिविधियों में भी षामिल हुई और बच्चों के साथ दीपावली की खुशियां मनाई। इस अवसर पर उन्होंने स्कूली बच्चों से सामान्य ज्ञान, कहानियां, पहाड़ा अन्य षैक्षणिक गतिविधियों के बारे में पूछा। श्रीमती साहू ने इन बच्चों के साथ भोजन भी किया। उन्होंने इन स्कुली बच्चों को दीपावली का उपहार भी दिया। साथ ही पटाखे एवं मिष्ठान का वितरण भी किया गया। बच्चे इस अवसर पर बहुत खुश नजर आये। कार्यक्रम मे शाला की शिक्षिका कविता हिरवानी एवं किरण नेताम

स्कूली बच्चों के माताओं का उन्मुखीकरण कार्यक्रम :-

बच्चों के परिजनों को भी स्कूल-परिवार से जोड़ने एवं पढ़ाई से परिचित कराने, साथ ही बच्चों के घरों मे भी पढ़ाई का माहौल बनाने की सोच के साथ, शिक्षकों द्वारा स्कूल में अध्ययनरत बच्चों के माताओं को स्कूल बुलाकर, उनके उन्मुखीकरण हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस पहल से बच्चों के परिवार भी शिक्षकों एवं स्कूल से जुड़ने लगे :-

स्कूल में विशेष गतिविधियों का आयोजन :-

स्कूल मे पढ़ाई के साथ-साथ जरूरी था स्कूल परिसर मे स्वच्छ तथा अच्छा वातावरण तैयार करना। शिक्षकों द्वारा बच्चों के साथ स्कूल की साफ-सफाई एवं पौधरोपण किया गया -

स्कूल एवं बच्चों के घरो में प्रिंट रिच वातावरण :-

शिक्षकों द्वारा स्कूल एवं बच्चों के घरो में प्रिंट रिच वातावरण निर्मित किया गया, इस प्रयास को राज्य स्तर पर सराहते हुए मुझे राज्य स्तरीय हमारे नायक मे स्थान प्राप्त हुआ -

शिक्षिका कविता हिरवानी को मिला राज्य स्तर पर हमारे नायक में स्थान

नारायणपुर। कविता हिरवानी को मिला राज्य स्तर पर हमारे नायक मे स्थान । कहते है न जहा चाह वहा राह शिक्षिका हिरवानी ने पूर्व से ही शिक्षा के क्षेत्र मे बेहतर कार्य करते हुये आज भी निरंतर अच्छे कार्य का प्रदर्शन जारी रखा है। पढाई तुहर दुआर 2.0 अंतर्गत 100 दिन गणितीय एवं भाषाई कौशल विकसित करते हुये बच्चों मे शिक्षा का प्रसार करने हेतु कविता द्वारा मोहल्ला एवं बच्चों के घरो मे जाकर बच्चों के घरो के दिवारो पर प्रिंट रच वातावरण निर्मित करते हुये बच्चों को गतिविधि आधारित शिक्षा प्रदान कर रही है, जिससे बच्चों मे हुये लर्निंग लॉस को दुर करते हुये निरंतर पढाई से जोडें रखने का सराहनीय कार्य कर रही है। यह अन्य शिक्षकों के लिए भी बहुत ही प्रेरणा दायक है। इस सराहनी कार्य हेतु पढाई तुहर दुआर अंतर्गत राज्य स्तरीय सीजीस्कूलडॉटइन पोर्टल पर हमारे नायक के रूप में स्थान प्राप्त होने के लिये जिला शिक्षा अधिकारी नारायणपुर, जिला मिशन समन्वयक नारायणपुर एवं सहायक कार्यक्रम समन्वयक रा.गां.शि.मि.नारायणपुर व विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी द्वार हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देते हुए इसी प्रकार सराहनीय कार्य करते हुये शिक्षा के क्षेत्र मे अलख जगाने की बात कही।

मीडिया द्वारा नवाचार गतिविधियों का विशेष कव्हरेज :-

स्कूल में शिक्षकों के अभिनव पहल तथा नक्सलपीड़ित परिवार के बच्चों का शिक्षा, खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में स्र्वांगीण विकास की जानकारी होने पर, मीडिया द्वारा स्कूल में नवाचार गतिविधियों का विशेष कव्हरेज किया गया -

कोरोना काल :-

इस बीच कोरोना (Covid-19) महामारी के कारण स्कूल बंद होने से इन बच्चों के पास शिक्षा प्राप्त करने का कोई भी साधन नही रहा। उनके पास मोबाइल एवं इंटरनेट की सुविधा नही होने के कारण ऑनलाईन क्लास के माध्यम से भी उन्हे अध्यापन कराना संभव नही हो रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में मैंने, हार नही मानते हुए इन बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने हेतु लाऊडस्पीकर क्लास को माध्यम बनाया। इसके लिये स्कूल के समीप स्थित साईं मंदिर में लाऊडस्पीकर क्लास संचालित करने की बात रखी, जिसे मंदिर के संस्थापक, शाला समिति के सदस्यो एवं छात्र-छात्राओं के पालकों द्वारा सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। इस तरह से मंदिर में लाउडस्पीकर क्लास की शुरूवात हुई । मंदिर मे कुछ बच्चों को कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए निश्चित दूरी मे बिठाकर लाऊडस्पीकर के माध्यम से पढ़ाया जाने लगा । जो बच्चे मंदिर नहीं आ पाते वो अपने घर पर रहकर लाऊडस्पीकर की आवाज से पढ़ाई करते। लाऊडस्पीकर क्लास से बच्चे तो लाभान्वित हो ही रहे थे, साथ ही मोहल्ले के अन्य परिवार के लोग भी मंदिर में सिखाए जाने वाले विभिन्न गतिविधियों का लाभ ले रहे थे।

श्री आलोक शुक्ला (भा.प्र.से.), तत्का. प्रमुख सचिव, शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा इस लाउडस्पीकर क्लास का निरीक्षण कर सराहा गया ।

तत्कालिन पुलिस अधीक्षक, श्री मोहित गर्ग (भा.पु.से.) ने मंदिर में संचालित लाउड स्पीकर क्लास से प्रभावित होकर, अपना जन्मदिन मंदिर में ही बच्चों के साथ मनाया ।

व्यवहारिक एवं जीविकोपार्जन ज्ञान :-

लाऊडस्पीकर क्लास को और भी रूचिकर बनाने के लिए बच्चों को शैक्षणिक अध्यापन के साथ-साथ व्यवहारिक एवं जीविकोपार्जन का भी ज्ञान देने की पहल की गई । चुंकि नारायणपुर ग्रामीण परिवेश का क्षेत्र है, यहां की संस्कृति, लोक परंपरा पर आधारित है। इस क्षेत्र के ग्रामीण परिवेश के लोग आज भी दोना-पत्तल का उपयोग भोजन करने के लिए करते हैं। साथ ही ग्रामीणों द्वारा स्वयं बनाये गए दोना-पत्तल को बेचकर अपने परिवार का जिविकोपार्जन भी किया जाता है। अतः सर्वप्रथम इससे जुड़े समुदाय के लोगो से सम्पर्क कर, उन्हे आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा मंदिर में दोना-पत्तल बनाने का प्रदर्शन कर, इसे बनाने की विधि छात्र-छात्राओं को सिखाया गया, जिसे बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ सीखा।

दोना–पत्तल बनाना सिखते बच्चे

कोरोना वायरस से बचाव एवं रोकथाम के संबंध में जानकारी :-

कोरोना काल के दौरान की परिस्थिति को देखते हुए अगली कड़ी में, कोरोना वायरस से बचाव एवं रोकथाम के संबंध में बच्चों को समझाने के लिए स्वास्थ्य विभाग से डॉक्टर को आमंत्रित किया गया। डॉ. इति तिवारी के द्वारा कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव एवं रोकथाम हेतु आवश्यक आवश्यक बातें जैसे - मास्क का उपयोग, हाथ धोना, भीड़भाड़ से दूरी बनाना एवं सर्दी-खांसी बुखार हो, तो तत्काल कोरोना टेस्ट कराना इत्यादि के संबंध मे लाउडस्पीकर के माध्यम से समझाया गया, जिसे बच्चों के साथ-साथ उनके परिजनों एवं मोहल्ले के आमलोगो ने भी सुना एवं समझा । इसके साथ ही यातायात विभाग के अधिकारियों द्वारा ट्रैफिक नियमों एवं सड़क में चलते समय आवश्यक सावधानियों का प्रदर्शन करते हुए, बच्चों को इसके बारे में विस्तार से समझाया गया ।

ट्रैफिक पुलिस ने बच्चों को दी नियमों की जानकारी

भास्कर न्यूज | बेनूर

जिला मुख्यालय नारायणपुर के गुडरीपारा में स्थित साई मंदिर प्रांगण में बुधवार को शिक्षकों द्वारा उन बच्चों की क्लास ली जा रही थी जो ऑनलाइन क्लास से वंचित हैं। इसी दौरान ट्रैफिक प्रभारी प्रदीप जोशी के नेतृत्व में यातायात विभाग के कर्मचारियों ने यहां पहुंचकर बच्चों को यातायात के नियमों को बताया व नियमों का पालन करने की समझाइश दी।

इसके अलावा अपने पालकों को भी यातायात नियमों के बारे में बताने को कहा गया। इस दौरान यातायात विभाग के कर्मचारी प्रधान आरक्षक राजेन्द्र वट्टी, दिलीप निर्मलकर, हरिश्चन्द्र उइके व शिक्षकगण कविता हिरवानी, किरण नेताम केआर ठाकुर मौजूद थे।

कोरोना काल में बच्चों के घर-घर जाकर प्रोजेक्ट वितरण :-

कोरोना काल मे कुछ बच्चे तो मंदिर परिसर मे पढ़ाई कर रहे थे किन्तु अन्य बच्चे जो मंदिर से दूर रहते थे, उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही थी । उनको नियमित शिक्षा से जोड़े रखने हेतु शिक्षक, बच्चों के घर-घर जाकर उन्हे पढ़ाते एवं प्रोजेक्ट वर्क देकर उनकी पढ़ाई नियमित रखी ।

विकास प्रदर्शनी में संचालित मोहल्ला क्लास की सराहना

नारायणपुर (नईदुनिया न्यूज)। राजधानी रायपुर में आयोजित हो रहे तीन दिवसीय विकास प्रदर्शनी एवं राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना के शुभारंभ में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे सांसद राहुल गांधी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के द्वारा प्रदेश के समस्त विभागों के द्वारा आयोजित योजनाओं के प्रदर्शनी का अवलोकन किया। बस्तर डोम में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में नारायणपुर जिले में संचालित शैक्षणिक गतिविधियों को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इसमें मुख्य रूप से कोरोना काल में जिले में बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने में के लिए जिला प्रशासन और स्कूल शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन मे चलाए गए मोहल्ला क्लास एवं स्थानीय बोली में अध्ययापन कार्य एवं मोटरसाइकिल गुरूजी जैसी उल्लेखनीय कार्य को प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसे जिले के दो शिक्षिकाओं कविता हिरवानी (स.शि.) प्राशा गुडरापारा एवं रंजीता नाग (स.शि.) प्राथमिक शाला डोंगरीपारा ने राज्यस्तरीय विभागीय प्रदर्शनी में मोहल्ला कक्षा एवं स्थानीय बोली मे अध्ययापन गतिविधियों को प्रस्तुत किया जिसक सराहना अवलोकन के दौरान माननी मुख्य अतिथि राहुल गांधी एवं मुख्यमं के द्वारा किया गया। विकास गतिविधि पर आधारित प्रदर्शनी के सफल आयोज के लिए कलेक्टर नारायणपुर ऋतुरा रघुवंशी, संयुक्त कलेक्टर अभिषेक गुप्ता डिप्टी कलेक्टर वैभव क्षेत्रज्ञ, जिला शिक्ष अधिकारी जी.आर. मंडावी का कुशल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

प्रदर्शनी में लगी मोहल्ला क्लास।

वर्क फ्राम होम के दौरान बच्चों के घर जाकर शिक्षिक दे रहे हैं कई जरुरी प्रोजेक्ट वर्क

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नारायणपुर. कोरोना महामारी के कारण व 2 वर्षों से स्कूलों में तालाबंदी की स्थिति बनी हुई है ऐसे में शिक्षकों द्वारा तरह-तरह के नवाचारों का उपयोग करते हुए बच्चों को सुरक्षित अपने घरों में रहते हुए नियमित पढ़ाई से जोड़े रखने का प्रयास किया जा रहा है। इसमें स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा नई पहल के साथ ग्रीष्म अवकाश में भी बच्चों को सारे प रखने और अपने परिवेश से जोड़े रखने के उद्देश्य से आमाराइट प्रायोजना के नाम से प्रोजेक्ट कार्य देते हुए बच्चों में शिक्षा के प्रति जुड़ाव बनाए रखने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। आमाराइट के अंतर्गत बच्चे अपने पालकों शिक्षकों से सहयोग लेते हुए समान जानकारी प्राप्त कर प्रोजेक्ट फाइल तैयार कर रहे हैं।

प्रोजेक्ट वर्क करते हुए विद्यार्थी।

शिक्षिका कविता हिरवानी ने बताया कि शाला मे अध्ययनरत बच्चे चुकी ग्रामीण परिवेश से और बहुत से बच्चे जो माओवादी पीड़ित परिवार के है ऐसे मे बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कोरोना काल मे यह कार्य और भी कठिन हो गया है। लेकिन शिक्षा विभाग नारायणपुर के अधिकारियों के सतत् मार्गदर्शन में बच्चों को सुरक्षित और नियमित पढ़ाई से जोड़े रखने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। शिक्षकों द्वारा सराहनीय कार्य करते हुये शिक्षा को सुगम बनाने का प्रयास सदा ही अनुकरणीय रहा है। इन शिक्षकों द्वारा बच्चों के घर घर जा कर बच्चों को जोड़े रखे हैं।

कोरोना काल के पश्चात जब स्कूल पुनः खुले तो मैने पाया की बच्चे अब स्कूल आने के लिये तत्पर थे। अंदरूनी इलाके के ये डरे सहमे बच्चे अब किसी भी शहरी बच्चों से कम नहीं थे । पढ़ाई, खेल-कूद, अभिव्ययक्ति कौशल सभी जगह ये बच्चे अपना मुकाम बना रहे थे ।

आज मैं पदोन्नती उपरांत अन्यत्र स्कूल में पदस्थ हूॅ। पर अभी भी ये बच्चे किसी प्रतियोगिताओं में, परीक्षाओं में सफल होते हैं, एवं शिक्षक दिवस एवं अन्य अवसरों पर बधाई देने, आशीर्वाद लेने मेरे घर तक आते हैं, साथ ही स्वयं से बनाये गये छोटे-छोटे उपहार देते हैं, तो वह क्षण मेरे लिये यादगार बन जाता है। शासकीय ज्ञान ज्योति स्कूल गुडरापारा मे शिक्षकों द्वारा इन बच्चों और इनके परिवार को आगे बढ़ाने के लिए किया गया हर प्रयास याद आ जाता है, जिसे मैंने करीब से देखा एवं महसूस किया है ।

पुरुस्कार एवं सम्मान :-

स्कूल मे किए गए अभिनव प्रयास के लिए राज्य एवं जिला प्रशासन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा, मुझे विभिन्न सम्मानों से सराहा गया, साथ ही इस वर्ष के राज्य शिक्षक सम्मान हेतु चयनित किया गया है ।

अध्ययन/शोध का निष्कर्ष ☞

शासकीय ज्ञान ज्योति स्कूल गुडरापारा, नारायणपुर पर किए गए इस पूरे अध्ययन का निष्कर्ष वही निकलता है, जिस वाक्य से मैंने इसका विवरण प्रारंभ किया था, **"शिक्षक है तो संभव है"** ।

मुझे याद आते है, स्वामी विवेकानंद जी के कथन - **"हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके"।** हमे बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ साथ व्यवहरिक और जीवोकॉपर्जन का ज्ञान भी देना चाहिए, तभी उनका सर्वांगीण विकास हो पाएगा ।

इस देश मे कितने ही ऐसे बच्चे होंगे जिनके पास सुविधाओं एवं आधुनिक संसाधनों का अभाव है । कुछ परिवार ऐसे हैं जो बच्चों को स्कूल सिर्फ इसलिए भेजते है ताकि बच्चों को भोजन मिल सके और जब वो अपने दैनिक काम, मजदूरी इत्यादि के लिए जाएं तो उनका बच्चा सुरक्षित स्थान पर रहे । यदि शिक्षक चाहे और थोड़ा प्रयास करे तो ऐसे बच्चों के मन मे शिक्षा की ज्योत जला सकता है, साथ ही इनके घरों मे भी अच्छा वातावरण तैयार कर सकता है। जो सीमित साधन और सुविधा इनके पास उपलब्ध है, उससे ही इन्हे शिक्षित कर सकता है, जरूरत है बच्चों एवं उनके परिवार मे शिक्षा के प्रति रूचि जगाने की । बच्चों के पास और उनके परिवार मे आधुनिक संसाधन जैसे इंटरनेट, मोबाईल न भी हो तो भी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई कारवाई जा सकती, बस जरूरत होती है दृढ़इच्छा की। इस कार्य मे शिक्षकों के प्रयास के साथ साथ प्रशासनिक सहयोग और परिवार व समुदाय का साथ भी उतना ही जरूरी है।

केवल किताबी ज्ञान से नहीं बनेगी बात, और भी जरूरी बाते हैं जो होना चाहिए ज्ञात ।
ज्ञान वह है जो आए जीवन मे काम, इसलिए ऐसी बातों से न रह जाए अनजान ।।
शिक्षक वह जो बच्चों मे सीखने की उत्साह और रुचि जगाएं,
सीख भी ऐसी जो उनके साथ परिवार के भी काम आए ।।

धन्यवाद